Brihaspati Aarti

श्री बृहस्पति देव की आरती (जय बृहस्पति देवा)

NityaPaath
nityapaath.com/brihaspati-aarti/

REFRAIN · टेक

टे॰ ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा।
छिन छिन भोग लगाऊं, कदली फल मेवा॥
ॐ॥

VERSES · आरती

1 तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
जगतपिता जगदीश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ॥

2 चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्ता।
सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता॥ ॐ॥

3 तन मन धन अर्पण कर, जो जन शरण पड़े।
प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्वार खड़े॥ ॐ॥

4 दीनदयाल दयानिधि, भक्तन हितकारी।
पाप दोष सब हर्ता, भव बन्धन हारी॥ ॐ॥

5 सकल मनोरथ दायक, सब संशय हारो।
विषय विकार मिटाओ, सन्तन सुखकारी॥ ॐ॥

6 जो कोई आरती तेरी, प्रेम सहित गावे।
जेठानन्द आनन्दकर, सो निश्चय पावे॥ ॐ॥

Text checked against: none found. Meanings, audio and all scripts at nityapaath.com/brihaspati-aarti/